B.L.D.E. Association's

S. B. Arts & K.C.P. Science College, VIJAYAPUR- 586 103.

ASSIGNMENT

For B.A./ ~~B.Sc.~~ ..BA...IVth... Semester

2022 - 2023

Name of the Student Kaveri . K. Chavan.

Roll No. 134 R.C.U. Seat No. U15KM21A0042

Subject Optional Hindi – 2.

Assignment No.	Date	Marks Assigned	Marks Obtained	Name and Signature of Teacher	Remarks
1	23/2/23	10	10	Dr. M. B. Patil	
2					
3					
4					

आदिकाल

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य के आदिकाल मे वीरगाथाओं का युग राजनीतिक दृष्टि से पतनोन्मुख सामाजिक रूप से दीन-हीन तथा धार्मिक दृष्टि से ओर काल है। इस काल मे एक ओर जैन, नाथ सिद्ध साहित्य की रचना हुई तो दूसरी ओर राजस्थान मे चारण कवियों की रचना है।

★ संदिग्ध रचनाएँ : इस काल मे प्राप्त सभी वीरगाथाओं प्रामाणिकता संदेह की दृष्टि से देखी जाती है। इस काल मे रचित चार काव्य - खुमान रासो बीसलदेव रासो पृथ्वीराज रासो तथा परमाल रासो

★ ऐतीहासिकता का आशाय : इन रचनाओं मे इतिहास - प्रसिद्ध चरित्र - नायकों को लिया गया है। किन्तु उनका वर्णन इतिहास की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। इन कवियों के द्वारा दिये गये संवत और तिथियाँ इतिहास से मेल नहीं खाते।

★ युद्धों का सजीव वर्णन : युद्धों का वर्णन इन ग्रन्थों का प्रमुख विषय है और यह वर्णन अत्यंत मूर्तिमान है। चित्रग्राही है। कवि आवश्यकता पड़ने पर स्वयं समरस्थल मे पहुँच कर युद्ध के विकट दृश्यों को देखकर सजीव चित्रण करते है।

★ संकुचित राष्ट्रीयता :- चारण कवियों ने अपने आश्रयदाता की प्रशंसा का मुक्त कंठ से गान किया जीविका प्राप्ति के लिए उन्हें अनाधिकारी राजाओं एवं सामन्तों की भी प्रशंसा की है।

* वीर और श्रृंगार रस :

इन वीरगाथाओं मे वीर तथा श्रृंगार रस का अद्भुत सम्मिश्रण है। वीर रस का तो इतना सुन्दर परिपाक हुआ है। कि कदाचित प्रकृती हिन्दी साहीत्य मे वीर रस का इतना पुष्ट रुप नहीं मिलता।

* प्रकृति चित्रण :

इस साहित्य मे प्रकृति का आलंबन और उद्दीपन दोनो रूपो मे चित्रण मिलता है। नगर, नदी, पर्वत आदि का वर्णन अत्यंत सुन्दरता से हुआ है।

* काव्य का दो रूप :

वीरगाथाएँ मुक्तक और प्रबन्ध दोनो रूपो मे मिलती है। प्रथम रूप का प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ बीसलदेव रासो है और दूसरे का पृथ्वीराज रासो। इन दोनो रूपो के अतिरिक्त कोई दूसरा काव्य रूप नहीं है।

* छन्दो का विविधमुखी प्रयोग : इस साहित्य मे जितना छन्दों का प्रयोग हुआ है। उतना अन्य साहित्य मे नहीं हुआ। दोहा, तोमर, नाटक, गाहा, गाथा, सोरठा आर्या आदि का कलात्मक प्रयोग हुआ है।

उपसंहार :

इस साहित्य का ऐतिहासिक तथा साहित्यिक दोनो दृष्टियों से महत्व है।

रीतिकाल

प्रस्तावना : रीतिकाल का साहित्य हिन्दी साहित्य में एक नवीन प्रकार का साहित्य है। रीतिकाल के साहित्य में परलोक तथा मो आदि की चिन्ता नहीं। इस साहित्य में जीवन के प्रति भौतिक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। इस काल की कविता में भावुकता और कला का अद्भुत समन्वय हुआ। 1700 - 1900 का समय हिन्दी साहित्य में रीतिकाल का समय रहा है। रीतिकाल को श्रृंगारकाल या अलंकार काल से भी जाना जाता है।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

* श्रृंगारिकता – श्रृंगारिकता की प्रवृति रीतिकाल में सर्वत्र प्रचुरता के साथ दृष्टिगोचर होती है। श्रृंगारि वर्णन रीति - काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य है। कवियों का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय नायिका - भेद नख - शिख, अलंकार निरूपण आदि रहा है।

अलंकारिता – यह रीतिकाल की दूसरी प्रधान प्रवृति है। संभावनामूलक उत्प्रेक्षा तथा चमत्कारमूलक अलंकार में श्लेष यमक और अनुप्रास का अधिक प्रयोग हुआ है।

* भक्ति और नीति – रिति काव्य में भक्ति और नीति संबन्धी सूक्तियाँ यत्र - तत्र बिखरी हुई मिलती है।

★ काव्य रूप – रीति कवि के काव्य की सृष्टि का उद्देश्य इस युग के राजाओं और रईसों की रसिकता की वृत्ति को संतुष्ट करना था। रीतिकाव्य में अधिकांशत कवित्त, सवैया और दोहा जैसे छंदों का प्रयोग किया गया है।

★ ब्रजभाषा की प्रधानता :– ब्रजभाषा इस युग की प्रमुख साहित्यिक भाषा है। वर्ण-मैत्री, अनुप्रासत्व ध्वन्यात्मकता, शब्द गति, शब्द-शोधन, अनेकार्थता व्यंग्य आदि की विशेषता इस काव्य में प्रचुर मात्रा में मिलती है।

★ लक्षण ग्रंथो का निर्माण – रीतिकाल में कवि कर्म और आचार्य कर्म एक साथ चलते रहे। रीति मुक्त कवियों को छोड़कर प्रायः इस काल के सभी कवियों ने लक्षण ग्रंथ का निर्माण किया है।

नारी चित्रण – रीतिकाल में नारी केवल भोगविलास का उपकरण मात्र थी। नारी के अनेक रूपों – गृहिणी, जननी देवी, भगिनी आदि पर उनकी दृष्टि नहीं पड़ी।

उपसंहार –

यह काल रीति-काव्यशास्त्र की दृष्टि से चाहे इतना महत्वपूर्ण न हो परन्तु कवित्व की दृष्टि से बड़ा मनोरम है।

भक्तिकाल -

प्रस्तावना -

संत काव्य में आध्यात्मिक विषयों की अभिव्यक्ति हुई पर वह जन-जीवन में डूबी हुई अनुभवियों से सम्पन्न है। संत साहित्य साधना लोक-पक्ष तथा काव्य वैभव सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। संत कवियों की विचारधारा निजी अनुभूतियों पर आधृत है। संत काव्य की प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित है।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ

* निर्गुण ईश्वर में विश्वास - सभी संत निर्गुण ईश्वर में विश्वास रखते है। इन्होंने ईश्वर के सगुण रूप का विरोध किया है। वह निर्विकार है। ईश्वर घट-घट में विराजमान है।

* बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध-

संत कवियों ने बहुदेववाद तथा अवतारवाद पर अविश्वास प्रकट करते हुए इस आडम्बर का निर्भिकतापूर्वक खंडन किया है।

* सद्गुरु का महत्व - गुरु को भगवान से भी अधिक महत्व देना संत कवियों की एक सर्वमान्य विशेषता है। कबीर के शब्दों में - गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पड़ा।

10 / 10

B.L.D.E. Association's

S. B. Arts & K.C.P. Science College, VIJAYAPUR- 586 103.

ASSIGNMENT

For B.A./ B.Sc. ....Vth.... Semester
2022 - 2023

Name of the Student Ayisha. Nadaf

Roll No. 43 R.C.U. Seat No. A2051735

Subject हिन्दी साहित्य का इतीहास - Paper II

Assignment No.	Date	Marks Assigned	Marks Obtained	Name and Signature of Teacher	Remarks
1	23/2/23	3	3	Dr. M. B. Patil	
2					
3					
4					

हिन्दी गद्य साहित्य का विकास

STUDENTS NAME		OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

हिन्दी गद्य साहित्य का विकास :

प्रस्तावना :

गद्य की प्रचुरता आधुनिक हिन्दी साहित्य की महती विशेषता है और इसीलिए हिन्दी का आधुनिक काल गद्य-युग कहलाता है। आधुनिक काल में जिस मात्रा में गद्य-साहित्य निर्मित हुआ है उतना पद्य में नहीं। आधुनिक युग विज्ञान और बुद्धि का है। वैज्ञानिक आविष्कारों - प्रेस आदि के बहुलता के कारण गद्य के माध्यम से जन-सामान्य तक विचारों का पहुँचना आसान हो गया। आधुनिक युग में कल्पना और भावुकता का स्थान बुद्धि और तर्क ने ले लिया है।

आधुनिक युग से पूर्व गद्य लिखने की परिपाटी का विशेष प्रचलन नहीं था, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि इस युग से पूर्व हमारे देश में गद्य का अभाव था। गद्य का विकास के लिए युग समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण हो और सांस्कृतिक जागरण तथा समृद्ध और अभ्युत्थान होना चाहिए। जबकि भारतीय इतिहास के मध्य युग में हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की एकता छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त जिस समय आधुनिक भारतीय भाषाएँ अपभ्रंश से विकसित हो रही थी, उस समय साहित्य-निर्माण की परंपरा पद्य में प्रचलित थी। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य में गद्य का प्रचार अपेक्षाकृत पद्य के बहुत बाद में जब राष्ट्रीय जीवन में सांस्कृतिक एकता की भावना का उदय हुआ सम्पन्न हो सका।

आधुनिक युग के सुव्यवस्थित गद्य से

KASAT

STUDENTS NAME		OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

पूर्व हिन्दी की विभिन्न भाषाओं में राजस्थानी तथा ब्रज में गद्य के जो टूटे-फूटे उदाहरण मिलते है उनका उल्लेख करते हुए हम खड़ी बोली गद्य के विकास की परंपरा का उल्लेख करेंगे।

राजस्थानी गद्य :

सन् 945 से 1345 तक साहित्यिक प्रगतिशीलता का केन्द्र राजस्थान था। उस समय राजस्थानी भाषा के दोनों रूप डिंगल और पिंगल अपभ्रंशों के प्रभाव से मुक्त नहीं थे। राजस्थानी लेखकों ने, विशेषकर चारण भाटों ने पद्य के साथ-साथ धर्म, नीति, इतिहास छन्द-शास्त्र, शालिहोत्र और दृष्टि-विज्ञान संबंधी विषयों पर गद्य और पद्य दोनों में रचनाएँ की। पिंगल-भाषा में नैतिक, पौराणिक और ऐतिहासिक विषयों पर कुछ रचनाएँ उपलब्ध होती है। कुछ लोकप्रिय कहानियाँ भी राजस्थानी गद्य में लिखी है। जैन साधुओं ने धर्मशास्त्र, वैद्यक और कामशास्त्र पर राजस्थानी भाषा में कुछ ग्रन्थ लिखे जो कि आज भी उपलब्ध होते है।

हिन्दी के प्राचीन गद्य के प्राचीनतम उदाहरण वस्तुतः इस काल की राजस्थानी गद्य के है।

ब्रजभाषा गद्य :

सन 1345 के उपरंत ब्रजभाषा के साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित हो जाने पर उसमें अनेक

KASAT

STUDENTS NAME		OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

गद्य रचनाएँ निर्मित हुई। सन् 1350 के लगभग किसी राजस्थानी लेखक ने हठयोग और ब्रह्म-ज्ञान से संबंधित तीन गोरखपंथी पुस्तके लिखी — गोरख-गणेश गोष्ठी, महादेव - गोरख संवाद और गोरखनाथ जी की सत्रह के 16 वीं शती के उत्तरार्द्ध में वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाविट्ठलनाथ ने 'शृंगार रस मंडन' लिखा। 17 वीं शती पूर्वार्द्ध में गोस्वामी गोकुलनाथ या उनके किसी शिष्य ने दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता तथा 'चौरा-सी वैष्णवों' की वार्ता नामक पुस्तके लिखी। जिनका ऐतिहासीक तथा सांस्कृतिक मूल्य सदा के लिए है। सन् 1626 के आस-पास ओरछा-नरेश जसवन्तसिंह के दरबारी वैकुण्ठमणि ने 'अंगन माहात्म्य' और 'वैशाख माहात्म्य' नामक दो छोटी - छोटी पुस्तके लिखी। इसके अतिरिक्त 18 वीं - 19 वीं शताब्दी कुछ और पुस्तकें भी लिखी गई।

खड़ीबोली गद्य :

खड़ीबोली दिल्ली और मेरठ के आसपास के जन-साधारण की भाषा है। खड़ी-बोली गद्य की सर्वप्रथम उल्लेखनीय रचना अक-बर के दरबारी कवि गंग की "चन्द - छन्द बरनन की महिमा" है। इसमें ब्रज मिश्रित खड़ीबोली का व्यवहार किया गया है। इस रचना का समय सन् 1570 है। रामप्रसाद निरंजन ने "भाषा योग वाशिष्ठ" की रचना की जिसकी भाषा काफी परिमार्जित है।

CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

लेखक चतुष्टय :

इसके उपरांत खड़ी बोली गद्य के विकास की परंपरा में मुंशी सदासुखलाल, नियाज, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल और सदल मिश्र का नाम आता है। सन 1800 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई। फोर्ट विलियम कालेज के हिन्दू-उर्दू - अध्यापक जान गिल क्राइस्ट ने हिन्दी-उर्दू में गद्य पुस्तकों को तैयार करने की व्यवस्था की। लल्लूलाल और सदल मिश्र दोनों फोर्ट विलियम कालेज में काम करते थे। इन दोनों ने अंग्रेजों के आदेश से हिन्दी गद्य रचनाएँ प्रस्तुत की। सदासुखलाल नियाज और इंशा अल्ला खाँ ने स्वतंत्र रूप से खड़ी बोली के कतिपय गद्य-ग्रंथों का निर्माण किया।

सदासुखलाल नियाज : दिल्ली के निवासी थे। इन्होंने विष्णुपुराण से उपदेशात्मक प्रसंग लेकर एक पुस्तक लिखी और हिन्दी में श्रीमद्भागवत का सुखसागर के नाम से स्वतंत्र अनुवाद किया। इन्होंने हिन्दुओं की बोलचाल की शिष्ट भाषा का प्रयोग कर ग्रंथों का निर्माण किया है।

इंशा अल्ला खाँ : उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे। इन्होंने फोर्ट विलियम कालेज से बाहर रहकर स्वतंत्र रूप से हिन्दी - गद्य की रचना की इन्होंने उदयभान चरित या रानी केतकी की कहानी की रचना की। रानी केतकी की कहानी हिन्दी गद्य की पहली मौलिक रचना है।

KASAT

ROLL NO. | DATE

लल्लूलाल :

आगरा के निवासी गुजराती ब्राह्मण थे। फोर्ट विलियम कालेज में नियुक्ति के बाद इन्होंने भागवत के दशम स्कन्ध की कथा को लेकर 'प्रेमसागर' नाम की पुस्तक की रचना की जो भागवत के दशम-स्कन्ध का अनुवाद है। इसके अतिरिक्त इन्होंने बैताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी, शकुन्तला नाटक माधव विलास, रामविलास और हितोपदेश का राजनीति के नाम से हिन्दी में अनुवाद किया। बिहारी सतसई पर इन्होंने लालचंद्रिका नाम की टीका लिखी।

सदल मिश्र :

ये बिहार के निवासी थे। इन्होंने चन्द्रावती या नासिकेतोपाख्यान ग्रन्थ खड़ी बोली में लिखा।

ईसाई सहयोग :

अब तक हिन्दी गद्य का जो प्रचार और उन्नति हुई उसका सर्वाधिक लाभ इन ईसाई धर्म-प्रचारकों ने उठाया। 15 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक इन्होंने कोई धर्म प्रचार नहीं किया। क्योंकि उनके लिए धर्म प्रचार करने के लिए कोई अवसर ही नहीं था। 1813 में विलफोर्स एक्ट के पास होने से इन्हें धर्म प्रचार की स्वतंत्रता मिल गई। बंगला तथा अन्य भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद होने लगा। हिन्दी गद्य का निर्माण धीरे-धीरे होने लगा।

KASAT

STUDENT'S NAME		OBTAINED
CLASS	SUBJECT	
ROLL NO.	DATE	

उपसंहार :

आधुनिक युग विज्ञान और बुद्धि का युग है। वैज्ञानिक आविष्कार प्रेस आदि के बाहुल्य के कारण चाह्य के माध्यम से जन-सामान्य तक विचारों का पहुँचना सुकर हो गया।